केंद्र पूर्व की ओर

यह आलेख सामान्य अध्ययन प्रश्न-पत्र-II (अंतर्राष्ट्रीय संबंध) से संबंधित है।

इंडियन एक्सप्रेस

लेखक- सी. राजा मोहन (निदेशक, इंस्टीट्यूट ऑफ साउथ एशियन स्टडीज, नेशनल यूनिवर्सिटी ऑफ सिंगापुर)

08 जनवरी, 2019

''बांग्लादेश का उदय पूर्वी उपमहाद्वीप के भविष्य को सुदृढ़ बनाने की संभावना को बढ़ा देता है।''

कुछ दिनों पहले हुए आम चुनाव में शेख हसीना की जीत और बांग्लादेश में इनके विरोधियों द्वारा इनपर धांधली का आरोप लगाने के मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करना, बांग्लादेश में होने वाले महत्त्वपूर्ण संरचनात्मक परिवर्तन और इसके दीर्घकालिक प्रभाव को याद रखना आसान बनाता है।

प्रधानमंत्री के रूप में अपना तीसरा लगातार कार्यकाल शुरू करने के बाद, शेख हसीना को उपमहाद्वीप के सबसे महत्त्वपूर्ण नेताओं में से एक माना जाने लगा है। 1996-2001 के दौरान पीएम के रूप में पहले के कार्यकाल के साथ संयुक्त, शेख हसीना अंततः दक्षिण एशिया और उसके बाद के सबसे लंबे समय तक सेवा देने वाली राजनीतिक नेताओं में से एक बन सकती है।

हालांकि कई अन्य क्षेत्रीय नेताओं को लंबे समय तक अपने पद पर बने रहने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है, लेकिन कुछ को अपने राष्ट्रों को आगे बढ़ाने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जैसे कि हसीना को। इससे भी कम के पास अपने क्षेत्रों के पुनर्गठन में मदद करने का अवसर है। पिछले एक दशक में, देश की आर्थिक संभावनाओं में एक नाटकीय सुधार हुआ है। हसीना द्वारा प्रदान की गई स्थिरता और निरंतरता इस परिवर्तन के लिए महत्त्वपूर्ण है।

उनके नेतृत्व में, बांग्लादेश दुनिया की सबसे तेजी से बढ़ती अर्थव्यवस्थाओं में से एक के रूप में उभरा है। पिछले एक दशक में इसकी प्रति व्यक्ति आय दोगुनी हो गई है। यह 'कम से कम विकसित देशों' की श्रेणी को छोड़ने के लिए बिल्कुल तैयार है। बांग्लादेश 2021 में अपना 50वां जन्मदिन मनायेगा और हसीना की महत्वाकांक्षा है कि वे बंगलादेश के वार्षिक आर्थिक बिकास दर को मौजूदा 7 प्रतिशत से लगभग 10 प्रतिशत तक बढ़ा दे।

बांग्लादेश के इस आर्थिक परिवर्तन का उपमहाद्वीप के लिए समग्र रूप से क्या मतलब है? इसने दूसरे स्थान पर पाकिस्तान को विस्थापित करके इस क्षेत्र में आर्थिक पदानुक्रम को बदलना शुरू कर दिया है। बांग्लादेश की प्रति व्यक्ति आय 1800 डॉलर हो गयी है, जो अब पाकिस्तान की तुलना में लगभग 1600 डॉलर में बड़ी है। कुल जीडीपी (275 बिलियन डॉलर) आने वाले वर्षों में पाकिस्तान के 310 बिलियन डॉलर से आगे निकलने के लिए तैयार है।

देखा जाये तो यह सफलता संख्या से अधिक, दिशा, गति और राष्ट्रीय उद्देश्य से अधिक संबंधित है। पाकिस्तान के आर्थिक भविष्य के बारे में व्यापक अंतर्राष्ट्रीय संदेह के विपरीत, ढाका की आर्थिक संभावनाओं के बारे में आशावादी अधिक है। यदि प्रधानमंत्री इमरान खान पाकिस्तान की अर्थव्यवस्था की एक और खामियों को दूर करने के लिए दुनिया भर में यात्रा कर रहे हैं, तो शेख हसीना व्यापार और निवेश पर ध्यान केंद्रित करते हुए सहायता पर निर्भरता कम करने की बात करती है।

बांग्लादेश का परिवर्तन पाकिस्तान में कुछ धारणाओं को बदल रहा है। बांग्लादेश के प्रति पारंपरिक पाकिस्तानी संवेदना प्रशंसा के माप तक है। पाकिस्तान में कुछ लोग इस्लामाबाद से 'बांग्लादेश मॉडल' को अपनाने का आग्रह कर रहे हैं - जहां राजनीतिक उत्साह के बजाय आर्थिक विकास पर ध्यान केंद्रित किया जाता है और चरमपंथ के बजाय धार्मिक प्रवृत्ति को बढ़ावा दिया जाता है। बेशक, कोई भी पाकिस्तान में इस तरह के बदलाव के लिए आगे नहीं बढ़ रहा है। इसके लिए, पाकिस्तान को अपने सैन्य और नागरिक नेतृत्व को उन नीतियों से तोड़ना होगा जो उसने इतने लंबे समय से अपनाया हुआ है।

दूसरा, जिस तरह बांग्लादेश बढ़ रहा है, ऐसी संभावना है कि यह पूर्व की ओर क्षेत्र के आर्थिक केंद्रीय गुरुत्वाकर्षण के झुकाव से दक्षिण एशिया के भीतर संतुलन को बदल देगा। बांग्लादेश की आर्थिक उन्नति पूरे पूर्वी उपमहाद्वीप को उठाने में मदद कर सकती है, जिसमें भारत के पूर्वोत्तर के साथ-साथ भूटान और नेपाल भी शामिल हैं।

भौगोलिक स्थिति ने दक्षिण एशिया के भीतर और उपमहाद्वीप और इससे सटे क्षेत्रों के बीच पाकिस्तान और बांग्लादेश दोनों को प्राकृतिक 'ब्रिज स्टेट्स' (Bridge States) के रूप में तैनात किया है। जहाँ एक तरफ रावलपिंडी ने सीमापार आतंकवाद और विद्रोहियों के माध्यम से अपने पड़ोसियों की अस्थिरता को चुना है, तो वहीं दूसरी तरफ ढाका ने क्षेत्रीय सहयोग का रास्ता चुना है।

यह ढाका की पहल थी जिसने 1980 के दशक के मध्य में सार्क के निर्माण में मदद की। आज, भारत के साथ आर्थिक सहयोग में संलग्न होने के लिए पाकिस्तान की अनिच्छा के कारण सार्क दुविधा में पड़ा हुआ है। पाकिस्तान की आलोचना करने के बजाय, हमें उस संप्रभु विकल्प को पहचानना चाहिए जो इस्लामाबाद ने बनाया है।

बांग्लादेश, भूटान, भारत और नेपाल के पूर्वी उपमहाद्वीप में उप-क्षेत्रीय सहयोग के लिए पाकिस्तान के विकल्प का चयन एक अनपेक्षित परिणाम रहा है। समान रूप से बिम्सटेक (BIMSTEC) फोरम का पुनर्मूल्यांकन भी काफी महत्त्वपूर्ण है जो पांच दक्षिण एशियाई देश (बांग्लादेश, भूटान, भारत, नेपाल और श्रीलंका) और दो दक्षिण पूर्व एशियाई देश (म्यांमार और थाईलैंड) के बीच अंतर-क्षेत्रीय सहयोग है।

बांग्लादेश अपने म्यांमार, बांग्लादेश और पूर्वी भारत के साथ युन्नान प्रांत को एकीकृत करने की बीजिंग की योजनाओं की सफलता के लिए भी काफी महत्त्वपूर्ण है। चीन-पाकिस्तान आर्थिक गलियारे के विपरीत, जहां भारत को अपनी संप्रभुता की चिंता है, तथाकथित बीसीआईएम गलियारे के विकास के साथ कम समस्याएं हैं। इसमें कोई संदेह नहीं है कि रोहिंग्या पर तनाव ने पूर्व में क्षेत्रीयता के भविष्य को थोड़ा अंधकारमय बनाया है, लेकिन बांग्लादेश और बर्मा दोनों के संबंधों में तेजी से वृद्धि और तीन बड़ी अर्थव्यवस्थाएं - चीन, भारत और आसियान के वजन में वृद्धि के कारण उन्हें क्षेत्रीयता की अनिवार्यता को मजबूत करना जारी रहेगा।

तीसरा, भारत को बांग्लादेश की पहल के लिए भी शुक्रगुजार होना चाहिए, जहाँ इसने भारत और बर्मा के साथ इसके समुद्री क्षेत्रीय मुद्दों को मध्यस्थता के माध्यम से शांतिपूर्वक हल किया है। यह बंगाल की खाड़ी के भीतर समुद्री आर्थिक और सुरक्षा सहयोग के लिए महत्त्वपूर्ण द्वार का निर्माण करता है। जिससे पूर्वी उपमहाद्वीप और दक्षिण पूर्व एशिया के बीच एकीकरण और गहरा हो जाएगा।

बहुत लंबे समय तक दक्षिण एशियाई भूगोल को भारत-पाकिस्तान संबंधों के चश्मे से देखा जाता रहा है। अनजाने में, दक्षिण एशिया के बारे में कथा काफी हद तक नकारात्मक ही रही है। उदाहरण के लिए, 'परमाणु फ्लैशपॉइंट', 'दुनिया में सबसे खतरनाक स्थान' और 'कम से कम एकीकृत क्षेत्र' जैसे विवरणों पर विचार करें।

निश्चितरूप से पाकिस्तान महत्त्वपूर्ण है, लेकिन ज्यादातर नकारात्मक कारणों से। यह एक चुनौती है जिसे प्रबंधित किया जाना चाहिए। लेकिन बांग्लादेश का उदय और इसके आसपास केंद्रित क्षेत्रीय सहयोग हमें पूर्वी उपमहाद्वीप के लिए एक सकारात्मक भविष्य और गतिशील पूर्वी एशियाई क्षेत्र के साथ इसके एकीकरण की कल्पना करने की अनुमति प्रदान करता है।

GS World टीम...

भारत-बांग्लादेश संबंध

चर्चा में क्यों?

हाल ही में बांग्लादेश के आम चुनाव में प्रधानमंत्री शेख हसीना की पार्टी अवामी लीग ने लगातार तीसरी बार बड़ी जीत दर्ज की है।

भारत की इस चुनाव में पैनी नजर थी। हालांकि, इस बार यहां के चुनाव में भारत की सक्रियता नहीं थी।

शेख हसीना की तीसरी जीत दक्षिण एशिया या सार्क देशों के शासकों के लिए एक बड़ी सीख है।

क्यों महत्त्वपूर्ण है बांग्लादेश भारत के लिए

- बांग्लादेश, भारत का न सिर्फ पड़ोसी मुल्क है, बल्कि दोनों देशों के संबंध भाषाई, सांस्कृतिक, भौगोलिक आधार पर भी घनिष्ठ रूप से जुड़े हैं। शेख हसीना के कार्यकाल में भारत और बांग्लादेश के संबंधों में प्रगति देखी गई।
- बांग्लादेश में शेख हसीना की सरकार भारत समर्थक मानी जाती है। उनके सत्ता में आने के बाद बांग्लादेश ने यहां चरमपंथी ताकतों की सक्रियता और उससे भारतीय हितों को नुकसान को लेकर भारत की चिंताओं को काफी हद तक दूर किया।
- शेख हसीना की अगुवाई वाली अवामी लीग की सरकार ने भारतीय उपमहाद्वीप के इस क्षेत्र में किसी भी तीसरे देश के अंतर्राष्ट्रीय दखल के मंसूबों को कामयाब नहीं होने दिया, जो भारत के हक में गया।
- बांग्लादेश में चरमपंथ के बढ़ने से भारत का पश्चिम बंगाल और पूर्वोत्तर राज्य सीधे प्रभावित होते हैं। ऐसे में शेख हसीना की सरकार ने ऐसी ताकतों के खिलाफ न केवल रोक लगाई, बल्कि देश में इस तरह की समझ भी विकसित की कि भारत विकास के क्षेत्र में बांग्लादेश को अहम मदद दे सकता है।
- बांग्लादेश का गठन 1971 में पाकिस्तान से अलग होकर हुआ। तब तक यह पूर्वी पाकिस्तान के नाम से जाना जाता था। बांग्लादेश के स्वतंत्रता आंदोलन में भारत की अहम भूमिका रही।
- बांग्लादेश के आजाद होने के बाद शेख हसीना के पिता शेख मुजीबुर्रहमान देश के पहले प्रधानमंत्री बने। उनके भारत के साथ अच्छे संबंध थे। लेकिन 15 अगस्त, 1975 को एक सैन्य तख्ता पलट के बाद उनकी हत्या कर दी गई। इसके बाद देश में इस्लामिक ताकतें सिर उठाने लगीं और यहां भारत विरोधी भावनाएं बढ़ने लगीं।
- इस सैन्य तख्ता पलट में शेख मुजीब के साथ-साथ उनके परिवार और पसर्नल स्टाफ की भी हत्या कर दी गई। केवल उनकी बेटियां शेख हसीना और शेख रेहाना ही बच पाईं, जो उस समय पश्चिमी जर्मनी के दौरे पर थीं। बाद में उनके देश लौटने पर प्रतिबंध लगा दिया गया।
- शेख हसीना ने इसके बाद एक लंबा वक्त भारत में निर्वासन में बिताया। तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने उन्हें भारत में राजनीतिक शरण दी। इस दौरान हालांकि उनकी राजनीतिक मुलाकातें कम ही हुईं। माना जाता है कि इसकी एक बड़ी वजह उस वक्त भारत में लगी इमरजेंसी भी रही।
- शेख हसीना पहली बार 1996 में प्रधानमंत्री के तौर पर सत्ता में आईं और 2001 तक इस पद पर रहीं। उनके इस चार साल के कार्यकाल में भी भारत-बांग्लादेश संबंधों में बेहतरी की गुंजाइश रही।
- शेख हसीना 2009 में दूसरे कार्यकाल के लिए निर्वाचित हुई और 2014 में वह एक बार फिर लगातार तीसरे कार्यकाल के लिए प्रधानमंत्री निर्वाचित हुईं। इस दौरान दोनों देशों के संबंधों में व्यापारिक, जनसंपर्क, सड़क व रेल संपर्क, शैक्षणिक संबंधों में भी प्रगति देखी गई।

संभावित प्रश्न (प्रारंभिक परीक्षा)

1. बिम्सटेक के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

   1. इसका गठन दक्षिण एशिया और दक्षिण पूर्वी देशों को मिलाकर किया गया।
   2. इसके मुख्य सदस्य देशों में बांग्लादेश, अफगानिस्तान भारत, नेपाल, म्यांमार, श्रीलंका, थाइलैण्ड एवं भूटान शामिल है।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

2. निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए-

   1. बांग्लादेश का गठन 1971 में भारत-पाकिस्तान युद्ध के उपरांत पूर्वी पाकिस्तान को अलग कर बनाया गया।
   2. अपने हाल के आर्थिक परिवर्तन के माध्यम से बांग्लादेश पाकिस्तान के जी.डी.पी. से आगे निकल गया है।

   उपर्युक्त में से कौन-सा/से कथन सत्य है/हैं?

   (a) केवल 1
   (b) केवल 2
   (c) 1 और 2 दोनों
   (d) न तो 1, न ही 2

संभावित प्रश्न (मुख्य परीक्षा)

प्रश्न: एक स्थिर बांग्लादेश दक्षिण एशिया के विकास में किस प्रकार महत्त्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है? विश्लेषण करें।

(250 शब्द)

नोट : 7 जनवरी को दिए गए प्रारंभिक परीक्षा (संभावित प्रश्न) का उत्तर 1(b), 2(b) होगा।

Committed To Excellence